

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का हिन्दी साहित्य में योगदान

भूमिका

हिन्दी साहित्य के इतिहास में चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का नाम एक ऐसे लेखक के रूप में लिया जाता है जिन्होंने अपने अल्प लेखन के माध्यम से भी साहित्य में अमिट छाप छोड़ी। वे आधुनिक हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एक ऐसे रचनाकार हैं जिनकी रचना-संवेदना, भाषा-सौंदर्य और विचार-गहराई आज भी प्रेरणा देती है। 'गुलेरी' ने यद्यपि साहित्य-सृजन के क्षेत्र में बहुत अधिक नहीं लिखा, परंतु जो लिखा वह हिन्दी साहित्य के मील का पत्थर बन गया।

जीवन परिचय

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का जन्म 7 जुलाई 1883 ई. को जयपुर (राजस्थान) में हुआ था। उनके पिता पं० शिवकुमार शर्मा संस्कृत और हिन्दी के विद्वान थे। 'गुलेरी' ने आरम्भिक शिक्षा संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में प्राप्त की तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ली। वे एक शिक्षक, भाषाविद, अनुवादक, इतिहासकार और साहित्यकार थे।

उनकी मृत्यु 1922 ई. में हुई — मात्र 39 वर्ष की आयु में। किंतु इस छोटी-सी आयु में उन्होंने हिन्दी साहित्य को जो दिया, वह अतुलनीय है।

साहित्यिक परिचय

गुलेरी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने कथा, निबंध, अनुवाद, भाषाशास्त्र और इतिहास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। उनका लेखन गहन अध्ययन, तार्किक दृष्टि और वैज्ञानिक विश्लेषण से युक्त था।

उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—

- **कहानी:** उसने कहा था
- **निबंध संग्रह:** कहानी: स्वच्छन्द निबंध, स्मृति की रेखाएँ
- **अन्य लेख:** भाषाविज्ञान, पुरातत्त्व, इतिहास और संस्कृति पर उनके अनेक शोध-

निबंध

हिन्दी कहानी में योगदान

गुलेरी का सर्वाधिक प्रसिद्ध योगदान हिन्दी कहानी के विकास में है। उनकी कहानी 'उसने कहा था' (1915) हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी मानी जाती है।

इस कहानी में प्रेम, कर्तव्य, त्याग और मानवीय संवेदना का अद्भुत संगम है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कहानीपन, चरित्र-चित्रण, घटना-प्रवाह, संवाद और भावनात्मक गहराई सभी का उत्कृष्ट संतुलन देखने को मिलता है।

'उसने कहा था' में प्रेम का स्वर रोमानी न होकर त्यागमय और मानवीय है। कहानी के नायक-नायिका लहना सिंह और उसके बालसखा के संवादों में जीवन की करुणा और स्नेह झलकता है। यही कारण है कि इसे हिन्दी की पहली परिपक्व कहानी कहा गया है।

निबंधकार के रूप में योगदान

गुलेरी का निबंध लेखन भी अत्यंत प्रभावशाली है। उनके निबंधों में गहराई, विद्वत्ता और हास्य का अनोखा मेल मिलता है।

उनके निबंधों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण, किंतु साहित्यिक गरिमा से युक्त है।

'कहानी: स्वच्छन्द निबंध' जैसे निबंधों में उन्होंने जीवन, समाज और संस्कृति के विविध पहलुओं पर सूक्ष्म दृष्टि डाली।

उनकी शैली में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क का संतुलित प्रयोग मिलता है, जिससे वे भारत के प्रथम आधुनिक निबंधकारों में गिने जाते हैं।

भाषा और शैली

गुलेरी की भाषा हिन्दी, संस्कृत और उर्दू शब्दों का सुंदर मिश्रण है। उनकी शैली में व्यंग्य, विनोद, व्याख्यात्मकता और संवेदनशीलता का सुंदर समन्वय मिलता है।

उनकी भाषा न तो कृत्रिम है, न अतिशय अलंकारिक — बल्कि सहज, स्वाभाविक और मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त करने में समर्थ है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक योगदान

गुलेरी केवल कहानीकार नहीं थे; वे एक गहन संस्कृतज्ञ और इतिहासकार भी थे।

उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति, बौद्ध ग्रंथों और पुरातत्त्व के विषय में अनेक शोध किए।

उनके निबंधों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति गहरी निष्ठा और गौरव का भाव दिखाई देता है।

उन्होंने भारतीय मूल्यबोध को आधुनिक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया।

गुलेरी की साहित्यिक विशेषताएँ

1. मानवीय संवेदना और त्याग की गहराई
2. भाषा की स्वाभाविकता और प्रवाह
3. जीवन की यथार्थपरक दृष्टि
4. संस्कृत एवं हिन्दी ज्ञान का समन्वय
5. भावनाओं की गरिमा और तर्क की सटीकता

निष्कर्ष

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हिन्दी साहित्य के ऐसे नक्षत्र हैं जिन्होंने बहुत कम लिखकर भी हिन्दी कथा-साहित्य को नई दिशा दी।

‘उसने कहा था’ जैसी एक ही कहानी ने उन्हें अमर बना दिया।

उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन-मूल्य, त्याग, प्रेम और कर्तव्य की भावना सजीव होकर प्रकट होती है।

वे हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक आधुनिक युग के प्रबुद्ध कथाकार, निबंधकार और भाषाविद थे।

उनका लेखन आज भी हिन्दी साहित्य के छात्रों, शोधार्थियों और पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत बना हुआ है।